मैन आफ स्टाईल

यादों के पन्नों से, यूं अनगिनत अध्याय, जिसका वर्णन है असंभव,

अनेकों खट्टे-मीठे अनुभव, सुखद अनुभूतियाँ, यूं लगा आज पूर्ण विराम।

कैसे भूल पायेंगे, जीने का अन्दाज, उदार स्वतंत्र विचारों का नजरिया,

विवेचनात्मक टीका-टिप्पणी, सरलता और सहजता से शब्दों को मरोड़ना,

रही व्यक्तित्व की खूबसूरती, व्यंगों को हंसते पिरोना , थी पहचान उनकी,

कामकाज में निपुण, व्यवस्थित, पर दुनियादारी से अनभिज्ञ , अनजान,

ड्रेसिंग सेंस कमाल, सूट-बूट पहचान, पर खादी भी रही लगाव उनका,

हर समूह में चहेते, यारों के यार 'गपशप क्लब ' के 'स्थाई सदस्य'।

संघर्षों, चुनौती, से परिचय कराया पापा ने, यही हमारी 'सफलता कुंजी'

'कठिन परिश्रम' ही तो था जीवन आधार, बस बने रहे परिवार स्तंभ ।

मार्गदर्शक बने खड़े रहे साथ, उन रास्तों पर चलना सीखा, हम सभी ने,

दो पहियों की गाड़ी में, मां बेमिसाल साहचर्य बनी, रहीं कुटुम्ब सारथी,

परिजनो की जिम्मेदारी बड़ी शिद्दत, स्नेहपूर्ण, बड़ी ईमानदारी से निभाई।

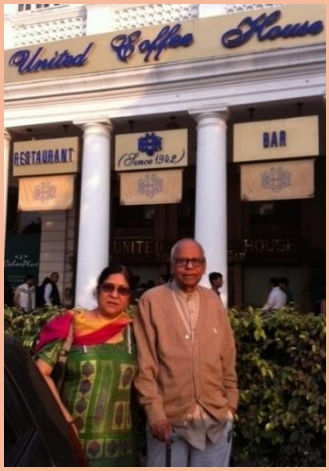

'कैफे डे कॉफ़ी'

'कॉफ़ी पे चर्चा' बंद है ठंडे बक्से में, हैं खामोश.. चली गई रंगत उसकी,

सर्दी की दुपहरी, यादों के झरोखे, फुर्सत के लम्हें, और कॉफ़ी उनके साथ,

उठती भाप से भरे घूँट, बेशुमार यादें, कभी न भूलने वाले सुखद अनुभव,

शौक उनका लिखना, पढ़ना व कॉफ़ी की आदत, रंग जमाना था स्वभाव,

नाती, पोते, पोती कहते 'कूल', उनमे घुल-मिलना ही था चीयर्स अन्दाज,

कॉफ़ी-हाउस बैठकें,कालेज की आदत बनी रही इस जीवनशैली में हिस्सा।

अनेक सफलताओं का श्रेय, है दर्ज कॉफ़ी के नाम, ऐसा कॉफ़ी से रिश्ता,

क्या कॉफ़ी हैं फायदे व प्रकार, जाने उन्हीं से, ऐसा था अनूठा अन्दाज,

करती आनंदित, भर देती थी ऊर्जा, ऐसा था चमत्कारी बीज का कमाल,

कैसे भूले, उन 'कैफे-डे'बातें, कॉफी उनके साथ, मिलने-जुलने के बहाने,

छूटा साथ, ख्वाहिशें दबी रह गईं, बस यादें एक 'खूबसूरत ख्वाब' जैसी,

हर शख्स के दिल में रहेंगे सदा, ऐसा व्यक्तित्व ही रहेगी पहचान उनकी।

समस्त ओम-परिवार सदस्यों की ओर से सादर शत् शत् नमन.. !